सहज राजयोग को उपचार प्रक्रिया के रूप में शामिल करना चाहिए - माथुर

माउंट आबू, 28 जुलाई। राजस्थान विश्वविद्यालय स्वास्थ्य एवं विज्ञान जयपुर के कुलपति डॉ. पी.पी.एस.माथुर ने कहा है कि समाज में बढ़ती हई मानसिक एवं शरीरिक व्याधियों की रोकथाम को चिकित्सा वैज्ञानिकों को आध्यात्मिक ज्ञान, प्रेम, करूणा, सहज राजयोग को उपचार प्रक्रिया के रूप में शामिल करना चाहिए। वे ब्रह्माकुमारी संस्थान के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में चिकित्सकीय प्रभाग की ओर से आयोजित माइंड-बॉडी-मेडिसन विषय पर अखिल भारतीय सेमीनार के उदघाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में मानसिक तनाव के कारण हृदयरोग, मधुमेह, उच्चरक्तचाप की व्याधियों के साथ अन्य संक्रामक बीमारियां भी समाज में निरंतर फैलती जा रही हैं। जिस पर अंकुश लगाने को मेडिटेशन काफी हद तक असरकारक सिद्ध हो सकता है।

ब्रह्माकुमारी संस्थान सहमुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि मनुष्य के अदंर व्याप्त ईष्या द्वेष की आंधी ने ही उसे विभिन्न प्रकार की समस्याओं के भंवर में उलझा दिया है। समस्याओं से मुक्ति पाने को बुराईयों को जड़ से समाप्त करना होगा, उसके लिए आवश्यकता है दृढ़ इच्छा शक्ति की।

नेपाल के सीनियर कंसल्टेंट पिडियाट्रिएशन डॉ. विनोददमन श्रेष्ठा ने कहा कि सहज राजयोग एवं ध्यान प्राचीन चिकित्सा पद्धति है जिसे अपनाने से मरीज अंतरनिहित शक्तियों की ओर उन्मुख होकर व्याधियों का हल ढूंढने के लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा पर मन एकाग्रित कर रोगों का निराकरण करने में समर्थ हो सकता है।

ब्रह्माकुमारी संस्थान महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि दवा से ज्यादा दुआ काम करती है, दुआएं से किसी से मांगने से नहीं मिलती, जब दिल से किसी की सेवा की जाती है तो उसके द्वारा स्वतः ही दुआएं दी जाती हैं।

मुंबई बीएसईएसएमजी अस्पताल निदेशक डॉ. अशोक मेहता ने कहा कि इच्छा अकांक्षा की तरंगे मानवीय मस्तिषक पर जब तक हावी रहेंगी तब तक वह तनावपूर्ण कष्टमय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश रहेगा।

इस अवसर पर ग्लोबल अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. प्रताप मिढ्ढा, कार्यक्रम संयोजक डॉ. बीएल शाह ने भी विचार व्यक्त किए।